www.xtrapapers.com

M15/1/AXHIN/HP1/HIN/TZ0/XX

Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi A: literature – Higher level – Paper 1
Hindi A : littérature – Niveau supérieur – Épreuve 1
Hindi A: literatura – Nivel superior – Prueba 1

Friday 8 May 2015 (afternoon)
Vendredi 8 mai 2015 (après-midi)
Viernes 8 de mayo de 2015 (tarde)

2 hours / 2 heures / 2 horas

Instructions to candidates

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a literary commentary on one passage only.
- The maximum mark for this examination paper is **[20 marks]**.

Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire littéraire sur un seul des passages.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est de **[20 points]**.

Instrucciones para los alumnos

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario literario sobre un solo pasaje.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es **[20 puntos]**.

2215 – 0093

© International Baccalaureate Organization 2015

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

www.xtrapapers.com

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए।

1.

बच्चे ताई के साथ खेलते हुए उनका तकियाकलाम “हे राम, तुम कहाँ हो” कह कर उन्हें छेड़ते और मजा लेते। ताई बच्चों को पकड़ने के लिए दौड़ने का अभिनय करतीं। यदि कोई लड़का पकड़ में आ जाता, तो उससे कहतीं, मुझे चिढ़ाते हो। तुम क्या कह रहे थे, एक बार फिर तो कहो। लोग कहते हैं कि ताई को बच्चों के मुँह से राम का नाम सुनना अच्छा लगता है और वे चिढ़ने कि नौटंकी करती हैं। यदि किसी परिवार में बच्चे का जन्म होता, तो ताई अपने राम को ही याद करती। हाथ जोड़कर, आँखें मूँदकर आकाश की और देख कर कहती, “इस खुशी के अवसर पर तुम कहाँ हो?देखो बच्चा तुम्हारी तरह ही सुंदर है।साल भर बाद ठुमक-ठुमक कर चलेगा।” कॉलोनी की किसी लड़की की शादी तय हो जाती तब भी उन्हें अपने राम ही याद आते। “लड़की को तुम्हारी ही तरह सुंदर वर मिला है। इसे सदा सुखी रखना।”

अब ताई कॉलोनी में कम ही निकलती। पहले की तरह घर-घर जाकर लोगों की राजीखुशी की खबर नहीं लेती। यहाँ तक कि उन्होने सुबह शाम मंदिर जाना भी छोड़ दिया। कॉलोनी छोटी ही है,पचपन-साठ घरों की।एक घर ताई के रहीम भाईजान और जमाली भाभी का भी, जो उनके ही मकान में किराए पर रहते हैं, तब से; जब उनके पति रामलाल ठेकेदार जीवित थे। पूरे शहर में राम-रहीम की दोस्ती चर्चा का विषय थी।उनका घर से निकलना कम हुआ, लोगों से मिलना जुलना न के बराबर रह गया, तो कॉलोनी की हवा में मनहूसी-सी छा गई। कुछ महिलाएं ताई के घर पहुँच गईं। उनमे से एक सयानी ने पूछा-“ताई, आपकी तबीयत तो ठीक है न? कॉलोनी में निकलना बंद कर दिया है आपने।” ताई ने मुस्कुराने की व्यर्थ कोशिश करते हुए कहा, “मैं तो भली-चंगी हूँ। जब तीस साल पहले मुझे कुछ नहीं हुआ और आज तक जीवित हूँ, तो अब भला मुझे कौन सा रोग पकड़ेगा? खूब कर लिया पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन। जी भर गया। घर से बाहर निकलने का मन ही नहीं करता।” कुछ भी मालूम नहीं कर सकीं महिलाएं। ताई के अनमनेपन का कारण रामलली को मालूम होगा। यह सोच कर एक युवती ने उससे पूछा, “तुम तो पूरे दिन ताई के साथ रहती हो। उनकी इस उदासी का कारण क्या है?” प्रश्न सुन कर रामलली को रोना आ जाता है। वह खुद भी चिंतित है की हर समय राम का नाम जपने वाली ताई पिछले एक माह से गुमसुम क्यों है।एक दिन थैले में भगवान की मूर्तियाँ, धार्मिक तस्वीरें और अन्य पूजन सामग्री भरकर उसे थमाते हुए कहा-“इन व्यर्थ की चीजों को नदी में बहा देना। मैं फालतू ही इनके फेर में पड़ी रही?” उस बेचारी ने वही किया। कभी कभी लगता है ताई का सिर फिर गया है।उस दिन टी.वी.देख रही थीं। पता नहीं ऐसा क्या देख लिया की उठ कर टी.वी. बंद कर दिया। उस रात वे भूखी ही रहीं।महीना भर तो हो चुका है, टी.वी.को बंद पड़े हुए। रामलली के आँसू गालों पर लुढ़कने लगे। पिछले तीस वर्षो से रामलली ताई के यहाँ काम कर रही है, तब से, जब वह किशोरी ही थी और अब अधेड़ है।लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि ताई अपना सब कुछ उसे ही देकर ऊपर जाएंगी। रामलाल भी धार्मिक प्रवृति के इन्सान थे।रामलाल अपनी पत्नी के नाम दो मकान तो कर ही गए थे, और भी बहुत कुछ छोड़ गए थे। बैंक में इतना रुपया जमा था कि उसके ब्याज से ही ताई का खर्च ठाठ से चल जाता।क्या करे रामलली। रहीम भाईजान और जमाली बुआ के घर बड़ा ताला पड़ा हुआ है।पता नहीं, वे कहाँ है? रामलली को उतना ही याद आता है जितना कि उसने टी.वी. में आते जाते देखा। जो घटना दिखलाई जा रही थी, उसे देख कर उनका मन भारी होता जा रहा था।सैंकड़ों-हजारों उन्मादियों की भीड़, एक धर्मस्थल को ध्वस्त करने के अभियान में जुटी हुई थी।

www.xtrapapers.com

रामजी की जय जयकार हो रही थी। नारे लग रहे थे। ताई दुखी थीं कि धर्मस्थल को गिरानेवाले हुडदंगियों को कोई रोक क्यों नहीं रहा है? ताई को यह देख अचरज हुआ कि नेता स्वयं भीड़ को प्रोत्साहित कर रहे हैं-एक धक्का और दो। और जब धार्मिक इमारत के दो हिस्से ढह गए, तो उन्होने टी.वी. को बंद कर दिया। शाम ढल चुकी थी, लेकिन ताई उठी ही नहीं। मंदिर के पट खुल गए, पर वे बाहर नहीं निकली। पहली बार किसी और को उनकी जगह पहले-पहल मंदिर की घण्टियाँ बजने का अवसर मिला। मंदिर के सामने हुड़दंगियों की फौज थी, जो जीत का जश्न मना रही थी।ताई रहीम भाईजान और जमाली भाभी के घर की और बढ़ीं। वहाँ पहुँच कर उन्हें एक और धक्का लगा। मकान के दरवाजे पर ताला लगा हुआ था। पहली बार उनके मुंह से निकला, “राम तुम नहीं हो। कहीं नहीं हो। यदि होते, तो तुम्हारे नाम पर अधर्म का यह शर्मनाक खेल नहीं खेला जाता।” और ताई ने उस दिन जो अपने राम और धर्म से नाता तोड़ा, तो फिर आजीवन नहीं जोड़ा। दस वर्ष बाद जब उनकी मृत्यु हुई, तब भी उनके मुँह से राम नहीं निकला। उनके अंतिम समय में रामलली और रहीम भाईजान उनके पास थे। दोनों ने कई-कई बार कहा, “ताई राम को याद करो। राम-राम कहो।” लेकिन वे अपने राम से रूठी ही रहीं और दुनिया से चली गई।

सुबोध कुमार श्रीवास्तव, “वागर्थ” (2012)

www.xtrapapers.com

2.

बँटी हुई औरतें

मैंने देखा है कि –
तमाम औरतें बँटी होती हैं,
बाहर और भीतर की औरत में।
बाहर से भीतर की यह तलाश ही
पुरुष को बना देती है एक उत्सुक प्रेमी।
गृहिणी के भीतर की औरत होती है
एकदम पहाड़ों की झील सी।
बूँद-बूँद रिसती लेकिन अपनी
उद्‌गम में एकदम खिली।
घर और बाहर को साथ-साथ सँभालती-सँवारती।
नूनतेल-लकड़ी से हाज़िरी रजिस्टरों
के बीच उलझी।
कामकाजी औरत के अंदर छुपी होती है
एक बिफरी, छलकती, गुहार लगाती औरत
जिसे बचा लेना चाहिए हर बार मरने से
जब भीतर की औरत मर जाती है
तो बाहर की औरत वस्तु बँ जाती है।
गाँव, कस्बों से भागी लड़कियों में से
एकाध पहुँच जाती है –
महानगर के बाज़ार,
तलाश होती है रोटी, कपड़ा, मकान
पहुंच जाती है सत्ता के मचान
गालों से पसीने पोंछती
कौन है यह गाँव की औरत
जिसके कंधे तने हैं
खेत की फसल के चमक से?
क्या यही
नहीं है वह
पूंजीवादी व्यवस्था ने सबसे ज्यादा
मारा है जिसके पूरेपन
को?

शिव नारायण सिंहं अनिवेद, कविता का गाँव (2008)